

DPN 5642

Title : पूजाविधि / PŪJA VIDHI

Run. No. 6333

Cat. No.

Micro. No.

Subject पूजाविधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / गन गन नेपालभाषा निर्देश रं

Size in cms. 17.5 x 7.5

Folios 5

Lines (in a page) 5

new direction

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

centimeter 5

10

15

20

ॐ चरु नक्राधिप नय स्वाहा ॥ ॐ अर्द्ध पृथिवी स्वाहा ॥ ॐ साग
र स्वाहा ॥ ॐ मृग नय स्वाहा ॥ ॐ ऊरु स्वाहा ॥ ॐ सर्वदीग
द सदिग वाक पात्र स्वाहा ॥ ॐ चतुर्दशलोकापाल मृगयाम्
कर्षयेत् ॥ वलिसंस्नानमय ॥ ॥ पक्षपहासपूजायाय ॥
॥ किं स्नानलवसथस्य वलिसंस्नानमय ॥ ॥ ॐ ह्रीं स्वादि वमि

सिद्धा॥ ओं वैज प्रथम स्वाहा॥ **स्वा**॥ ओं वैज प्रथम स्वाहा॥ **स्वा**॥ ओं वैज प्रथम स्वाहा॥
 हा॥ मग॥ ओं नैवि य स्वाहा॥ **ही**॥ ओं नैव ज नाताय स्वाहा॥ **ना**॥
 किल खस धर्म मल्ल म हाथ के॥ ॥ ओं नैव न त म यं म न ज स
 सिंगम पुरुष रिगं नाना न त स मा किं न द न ल न दायि न गु व धा व
 ह धर्म स्वा न स धर्म न र धे व न नि र्ग्या न य मि नि रा धे न मं पृथु न

त्रम कुलं॥ जाकि न स अज नि पु नाम॥ ॥ ओं जा हूं श्री म द व ज
 स त्व गु व व व न न क म ला स र्म म्य क्स्ना व रा स नं क वा य न म हूं
 न म स्मि तुं न भान म ह र क्त्वा हं त्वा न म श म्या मि आ गु व ना थ पृथ्व द
 मे॥ ॥ **ध्यान**॥ यस्य पु मा द कि व र स स्मृ टि ना त्म न त्व न त्व पु र
 प नि क ना पु र गां ध का ना पृथ्वी गु ना वि न द र म ह स वि ना स मृ धे न

१५
 १०
 पालमूडायोदस्यथम् ॥ ॐ ह्यदिना कपालमूडायो पायं अ
 धं अत्रमनं धां कृमनं पुमिह स्वाहा ॥ ॐ उ ४ हं वं हा ॥ ॐ उ ४ डाय
 स्वाहा ॥ ॐ उ माय स्वाहा ॥ ॐ व नू नाय स्वाहा ॥ ॐ कू व लाय स्वाहा
 ॥ ॐ अ ग्रीय स्वाहा ॥ ॐ न म न स्वाहा ॥ ॐ वा यु व स्वाहा ॥ ॐ उ सा
 नाय स्वाहा ॥ ॐ उ ड्ड वृ क्त न स्वाहा ॥ ॐ मूर्या गु हा धि प म स्वाहा ॥

५
 ० CMTS. 5 10 15 20 25
 सहदवमंधः विमक गुरुं लु वलि विमिष्ट अन्न ज म न गुरु
 रूप निश्रु आया ४ पुमि वा यु ध ना धि प निश्रु ॥ ॐ आ न रू ना धि प
 निश्रु दे वा उ ड्ड च च ला र्क पि ता म ह श्र द वा ४ स म ना रू वी य व ना
 न ४ ध ना ध ना गु र ग र ४ स म ना पु नि पु नि श्रु क नी व्य द य लु
 सू फा सू फा र श्र व दि मा च रू गुरुं लु रु श ४ स ग न स म ना स पु

15

10

कामाभयः स्वयं नार्थयसिद्धमउत्पादयामि पञ्चमः वनवाधिविलं
 निमलुयामि अहमर्चयन्तान् लुक्ता विष्णुवनवाधिनानि काकुडा
 रुद्रयं जगताहिनायः दसनां सर्वयायानां पुष्पानां चानभाधनां कृष्ण
 पुरासंवन्निजामि आर्याः सौगंधाधनं मया वाधनवाधन कृष्ण
 ह्यायमगमपुकिरावार्थसावधपुहवद्यावयमिवचनमनयं

5

स्तेनमहकनिचियं गुत्तरास्वनायः अं नमा वृद्धाय गुत्तरनभाधर्माय
 नानिनभाः संघायः मरुत्तमगिरिस्थायिसगमं नमः सर्ववृद्धं नमः
 मिधर्मैः किन्नरुचिर्गैः संघं वभाजसंघः वत्तनयनभासुर्गः नमः
 नृपमसन्नः सर्वपुनिदिनयाभयः नृभाय जगत्संघवृद्धवाधेय
 धमम ॥ आचारधेयनरायामिः वृद्धधर्मे गगल्लरुमः वीरधेयि

0

CMTS.

5

10

15

20

25

पुनिष्ठ. स्वाहा॥ गंगा यं कालेन वायुमलुलं: गङ्गपविलैका नैनः
मृमिमलुलं: गङ्गपविआकावेममलुलुयः कृमचुनिकापनि
मूकयमलाऊनः कृमरुकादिपचिपुनिर्गं॥ ओं कूं ओं किं वं
ओं मां पां मां वं कालजागदधिष्ठितं: पचेशमपचपुदिपच
पचपच॥ ॥ ओं आश्वहं गन्तुमृदायाधिष्ठितः गंगालोक